जीवन mag

अंक-6 April-July 2014 Joint Issue

www.jeevanmag.com

India's first online bilingual magazine by students.

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में...

हर आयुवर्ग के लिए एक संपूर्ण पत्रिका

Editor-In-Chief Akash Kumar

Executive Editor Nandlal Mishra

Associate Editor Abuzaid Ansari

Team JeevanMag.com

Editor-in-chief

Akash Kumar is a student of class XII Science at Jamia Millia Islamia, New Delhi. He hails from Motihari in Bihar. Fondly called Man Of Sky by his friends, he is a passionate reader.
Email- akashmanofsky@gmail.com Facebook- www.facebook.com/akashmanofsky

Executive Editor

Nandlal Mishra is pursuing B.Tech in Humanities (2nd year) from Delhi University. He is basically from Samastipur in Bihar. He is fondly called Sumit by his friends.
Email- nandlal.sumit@gmail.com Facebook- www.facebook.com/sumit.nandlal

Associate Editor

Abuzaid Ansari is a student of class XII at Jamia Millia Islamia, New Delhi. Basically from the city of Nabobs- Lucknow, Zaid traverses his pen in Urdu & Hindi with the same influence.
Email- abuzaidansaari@gmail.com Facebook- www.facebook.com/abuzaid.786

EDITORIAL BOARD MEMBERS

Aminesh Aryan (B.A Hons. 1st year- Political Science, Banaras Hindu University, Varanasi)

Anamika Sharma (Diploma in Architecture, G.P.S Sundarnagar, Himachal Pradesh)

Kuldeep Kumar
(XII Science, Jamia Millia Islamia, New Delhi)

Kumar Shivam Mishra
(BA Hons. English, Commerce College, Patna)

Akshay Akash, Ashish Suman, Santosh
(B.Tech in Humanities- 2nd Year, Delhi University)

Raghavendra Tripathi (B.Tech in Innovation with Maths. & IT, 3rd year, Delhi University)

PUBLIC RELATION OFFICERS

Aryan Raj (XII Science, Allen Career Institute, Kota)

Faisal Alam & Rishabh Amrit
(XII Science, Shantiniketan Jubilee School,Motihari)

Aashutosh Pandey
(XII Science, M.S. college, Motihari)

Alok Kumar Verma
(XIIth Science, Lucent international school, Patna)

Creative Commons © 2014 JeevanMag.com
Authors hold the ethical right to be known as the creator of their respecive content.
Cover Page Source- http://beehiveartsalon.blogspot.com
Quotes at the bottom of each page- **Shiv Khera**

Publisher- Blue Thunder Student Association (Affiliated to VIPNET, Govt. Of India), C/O Vijay Kr. Upadhyay, West of Dr. Shambhu Sharan, Belbanwa, Motihari-845401, Bihar.
Facebook –www.facebook.com/jeevanmag & www.facebook.com/bluethunderstudentassociation
Twitter- www.twitter.com/jeevanmag Email ID- jeevanmag@gmail.com
Delhi Contact- Nandlal Mishra, VKRV Rao Hostel, University of Delhi, New Delhi Phone- +91 9631021440

www.JeevanMag.com

FIRSTLY & FOREMOSTLY

Hello friends,
Team JeevanMag is here with the sixth edition of this unique initiative- India's first online bilingual magazine by students. It's 1 AM & I am busy writing (Directly typing) this editorial note. I forgot to write this special stuff at time & well, you can see what the outcome is…Time and Tide wait for none.
We plan to go bimonthly now & for that we are restructuring our organisation. We are aspiring, setting new goals & then gradually achieving them. Abuzaid Ansari is now the associate editor of Jeevan Mag & that's a big change. I met this guy in school library & the interlocution turned out to be profound & delightful to both of us. Apart from being a pragmatic poet, he has got managerial skills too. I am sure that Nandlal Bhaiya (Executive Editor, Jeevan Mag) would get an exceptional companion in him. I can bet that he is making future plans for Jeevan Mag even as you read this issue.
Change is the law of nature & that's what happenned in the political arena too. The recent Loksabha elections gave a clear majority to BJP-led NDA making Mr. Narendra Modi the Prime minister of the country. The Bharatiya Janata Party got majority on its own making it solely responsible for whatever will happen in the power blocks of Delhi. Historical mandate, unputdownable government & Great responsibility!!! It has been more than 2 monthes of the government & meanwhile, a great volume of water would have flown through the Ganges. The track record of the government has been an average one & Mr. PM understands that the commonfolk is watching out his each & every move.

This time also Team JeevanMag has tried to provide you with a complete edutaining package. From poems to memoirs & from debates to stories, we have it all for you. Mark Twain once said, "I CAN LIVE FOR TWO MONTHES ON A GOOD COMPLIMENT." Compliment is the essential fuel to keep Jeevan Mag going on. Feel free to give us your suggestions. Mail me at- akashmanofsky@gmail.com

Affectionately Yours,

Akash Kumar
Editor-in-Chief
JeevanMag.com

www.JeevanMag.com

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं.

काव्य सुधा

बेटियाँ

प्रतिक्रियाएँ-बहसें,
बड़बड़ाना-गुस्साना,
उबते ही-
पन्ने की-सी पलट देना,
दैनिक समाचार-
पत्रों जैसी;
सबरंग बातें-
सुनाई जाती हैं।
क्या बेटियाँ-
इसीलिए पराई बताई जाती हैं?

सपना

जीना सपनों को,
सपनों में जीना;
जीवन का सपना
मेरा वह सपना।

ममता किरण

शोधार्थी (हिन्दी)
बिहार विवि, मुजफ्फरपुर

मुसाफ़िर

अंधेरी रात,
पैदल मुसाफ़िर,
अकेले सुनसान सी सड़क
की ओर कदम बढ़ाता।

थका हारा,
प्यासा,
विचलित,
डसती हुई तनहाई।

कोसों दूर मंज़िल,
उसी की तलाश में,
उत्सुक,
आवारा।

लौ की भांति
टिमटिमाती,
आशा की किरण,
दिखी और बुझी।

जोश,
उत्साह,
साहस,
सब धरे के धरे रह गये।

अभिनव सिन्हा

कक्षा 12वीं foKku
अररिया पब्लिक स्कूल, अररिया
www.facebook.com/abhinav.d.cool

विप्लव- उनकी यादों में

ये आंसू पलकों पे आने दो ज़रा
इन्हें ना रोको बहने दो ज़रा।

ये आँखो मे बसा प्यार हैं
रिश्तों का एहसास हैं।
कुछ वायदे हैं,
कुछ कसमें हैं,
वो पल हैं जब पल-पल हम साथ थे
वो बीते कल हैं जब हाथ में हाथ थे।
इन्हें अब बहने दो ज़रा।

इन्हें ना रोको,
इन्हें ना पोंछो,
उनके साथ चले जाने दो ज़रा।
जो लौटने की बात कह
अनंत के राही हो गए।
क्या है अनंत में?
जो उन्हें भा गया
अपनी हाथों जो दुनिया बसाई
उन्हे बह जाने दो ज़रा।

ना रोको यह दर्द
जो खुशी, जो प्यार दिल में हैं
पलकों पे आने दो ज़रा।
यह जिनकी अमानत हैं
उनके साथ जाने दो ज़रा।
ये आँसू पलकों पे आने दो ज़रा।

अमिनेष आर्यन

राजनीतिशास्त्र स्नातक (प्रथम वर्ष)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
www.facebook.com/aminesh.aryan

www.JeevanMag.com

चिंतन-मनन

इंटरव्यू का इंटरव्यू

-विकास आनंद झा

दो-तीन दिनों से मेरे कान पक गये कि वैदिक जी एक आतंकवादी से मिले और ये काम तो बिना ISI या सरकार की सहायता के किसी पत्रकार के लिए संभव नहीं है. हर टीवी चैनल पे, हर अख़बार में यहीं चर्चा है. विपक्ष सरकार को घेर रही है और सरकार अपने आप को पाक-साफ़ बता रही है जैसे उनका इस पूरे मामले से कोई नाता ही ना हो. सदन मे हंगामेबाज़ी ,सोशियल साइट्स पे कमेंटबाज़ी और टीवी पे बहसबाज़ी हो रही है. सड़कों पे पुतले फूंके जा रहे हैं. सबको लगता है की शायद इससे पहले कोई आदमी मिला ही नही टेररिस्ट से. अक्सर ये चर्चा हमें फिल्म स्टार्स और अंडरवर्ल्ड के संबंधों के बारे में सुनने को मिलती है. (संजय दत्त, अनिल कपूर, सलमान ख़ान -दाऊद इब्राहिम). राहुल गाँधी वैदिक जी को RSS का आदमी बता रहे हैं तो कुछ भाजपा नेता कह रहे हैं कि राहुल पहले ख़ुद की पार्टी के बारे में पड़ताल कर लें.

इन सब बातों को छोड़ दें तो एक पत्रकार को पूरा हक़ है कि अपने काम को गोपनीय तरीके से अंज़ाम दे पर जब बात राष्ट्रीय सुरक्षा की हो और यह एक गंभीर मुद्दा बन गया हो तो ये वैदिक जी के लिए परेशानी का सबब बन सकती है. हम सभी ये जानते है की मीडिया हमारे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होती है और मीडिया से जुड़े किसी भी संगीन मामले पे सरकार को सजग हो असरकार कारवाई करनी चाहिए. बाकी इन सभी घटनाओं ने पत्रकारिता को किस पैमाने पे लाकर खड़ा कर दिया है ये हम सभी अपनी आँखों से देख रहे हैं. मुझे याद है मैंने कुछ साल पहले BBC के एक पत्रकार की नक्सलियों से बातचीत रेडियो पर सुनी थी. कई पश्चिम के पत्रकारों द्वारा लिए गये आतंवादियों के इंटरव्यू हमने पत्रिकाओं में पढ़ीं भी हैं. ये वो पत्रकार होते हैं जो निर्भीक और निष्पक्ष होकर पत्रकारिता किया करते हैं. पर यहाँ माज़रा कुछ और ही है- एक ओर जहाँ पाकिस्तान के एक चैनल को दिए गये इंटरव्यू मे वैदिक कश्मीर को अलग होने देने पर अपनी सम्मति जाहिर करते है तो दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान में कहते हैं कि ऐसा अगर होगा तो मेरे सर को धड़ से अलग करने के बाद होगा. ये सारी बातें भारतीय मीडिया की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह खड़े करती है. वैदिक जी के इस कथित इंटरव्यू पर सवाल भी उठता है जो कि किसी भी जर्नल मे प्रकाशित नहीं हुआ. ये कैसा इंटरव्यू है??? साथ ही कश्मीर मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया देकर उन्होने अपने लिए एक और मुसीबत खड़ी कर दी. वैदिक जी के साथ ना तो हिन्दुस्तान के पत्रकार आ रहे हैं और पाकिस्तान के पत्रकार भी इस मुद्दे पर उनके साथ खड़े नही दिख रहे हैं.

अब तो बस इनके इंटरव्यू का इंटरव्यू हो रहा है.

लेखक जीवन मैग के जनसंपर्क अधिकारी हैं तथा शैक्षिक सोशल नेटवर्किंग साईट कुंज के संस्थापक CEO हैं. आप फिलहाल महर्षि अरविन्द इंजीनियरिंग कॉलेज, जयपुर से बी.टेक कर रहे हैं तथा पूर्वी चम्पारण, बिहार से ताल्लुक रखते हैं.

http://www.koonj.tk

www.facebook.com/vikash.jha

www.JeevanMag.com

यदि आपको लगता है कि आप कर सकते हैं - तो आप कर सकते हैं! अगर आपको लगता है कि आप नहीं कर सकते - तो आप नहीं कर सकते! दोनों ही सूरतों मैं आप सही हैं!!!

कश्मीर में सेना

- कुलदीप कुमार

मुझे इस बार गर्मी की छुट्टियों में कोलकाता जाने का मौका मिला। वहां मेरे ठहरने की व्यवस्था आर्मी कैंप में थी। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस कैंप बहुत मनभावन लगा। ये अलग बात है की तपिश के कारण परेशानियों का सामना तो करना ही पड़ा। फिर भी अपने घुमक्कड़ स्वभाव के अनुरूप लगभग सभी मशहूर जगहों यथा, बेलूर मठ, विक्टोरिया मेमोरियल, दक्षिणेश्वर काली मंदिर, कोलकाता और हावड़ा ब्रिज, साइंस सिटी, कोलकाता विश्वविद्यालय और प्रेसीडेंसी कॉलेज आदि घूमने का मौका निकाल ही लिया। महलों का ये शहर अतीत को समेटे आधुनिकता की ओर अग्रसर है। मेट्रो और ट्राम तो कोलकाता की शान हैं। मेरे अंदर जानने की जिज्ञासा जगी कि थलसेना यहाँ कौन-कौन से कार्यों के लिए तैनात है। मुझे बताया गया कि बगल में हुगली नदी में खड़े जहाजों की देखभाल थलसेना के ही ज़िम्मे है। जाकर देखा तो बहुत पुरानी लोहे की माध्यम आकार की चार जहाजें खड़ी थीं। चार जहाजों की देखभाल के लिए लगभग ३०० सेना के जवान और प्रति साल करोड़ों का खर्च। उत्सुकता और बढ़ी तो ये भी जानना चाहा की आख़िर जहाज का यहाँ क्या काम है। पता चला कि यदि बांग्लादेश से युद्ध छिड़ा तो इसका इस्तेमाल यातायात के लिए किया जा सकता है। मुझे यह भी बताया गया की शायद ही इसकी ज़रुरत पड़े।

सेना के लगभग सभी जवान तीन या छह साल कश्मीर में गुज़ार चुके थे। मसला जब कश्मीर का चला तब लगभग सभी जवानों की याद कड़वी ही थी। कश्मीर में सेना का ये हाल सुनकर मुझे भी सोचने पर विवश होना पड़ा। सद्भावना मिशन के तहत कश्मीरी लड़कों की पढाई की समुचित व्यवस्था आर्मी स्कूल में- वो भी मुफ्त। मरीज़ों के लिए सेना अस्पताल बिलकुल फ्री। छह महीने राशन फ्री छह महीने नाम मात्र के पैसे पर। आर्मी वालों के लिए भी कश्मीर में अलग नियम-कानून। सेना के जवानों की बन्दूक की नाल नीचे से ऊपर नहीं उठनी चाहिए। भीड़ में ग़र कोई आतंकवादी दिख जाये तो मारना नहीं है हाँ, अकेले में दिखे तो सिंगल शॉट में मारना है और वो गोली भी आतंकवादी को ही लगनी चाहिए। किसी आम आदमी को लग गयी तो सेना के उस जवान को अपनी छुट्टियों में सिविल कोर्ट जा कर मुकदमा लड़ना पड़ेगा। फ़ौज़ की कोई ज़िम्मेदारी नहीं। मतलब साडी छुट्टियां बर्बाद, विद्रोह का सामना अलग से। प्रायः सेना में गलती करने वाले का कोर्ट मार्शल अंदर ही होता है पर कश्मीर के मसलों में नहीं। जवानों को अलगाववादियों के पत्थरों की मार सहनी पड़ती है और उस स्थिति में भी छिपकर जान बचने के सिवा उनके पास कोई चारा नहीं होता। पेट्रोलिंग रात १ से ४ के बीच होती है ताकि अलगाववादियों के प्रकोप का सामना न करना पड़े। एक जवान ने तो यहाँ तक कहा कि कुछेक लोग

www.JeevanMag.com

आतंकवादियों को दामाद की तरह घर में रखते हैं। सेना ये सारी बातें जानते हुए भी कुछ नहीं कर पाती। आतंकवादियों के लाश तक की स्थानीय लोग मांग कर देते हैं। एक सैनिक ने कहा कि वरिष्ठ अधिकारी कहा करते हैं कि बेटा कश्मीर आये हो तो मौत से खेलना तो है ही किसी तरह गाड़ी में छिपकर तीन साल का समय निकल लो, फायदे में रहोगे। कश्मीर में सेना द्वारा इतनी सुविधाएँ उपलब्ध करने के बावजूद ऐसी दुर्भावना बहुत ठेस पहुंचती है। सीमा पार से प्रायोजित आतंकवाद को अलगाववादियों का प्रश्रय मिला हुआ है। एसी में रहने वाले और कारों पर चलने वाले सिविल सोसाइटी के भद्रजन मानवाधिकारों पर होहल्ला तो बहुत मचाते हैं पर हकीकत में वे यथार्थ से बहुत दूर हैं। क्या मानवाधिकारों के घेरे में बस वे अलगाववादी आते हैं जिन्होंने हिंसा से घाटी को नर्क बना रखा है? क्या उन सैनिकों का कोई मानवाधिकार नहीं जो अपनी जान की बाज़ी लगा माँ भारती के अखंडता की रक्षा कर रहे हैं? कश्मीर की समस्या का समाधान नितांत आवश्यक है।

लेखक जीवन मैग की संपादन समिति के सदस्य हैं। आप जामिया मिल्लिया इस्लामिया में विज्ञान संकाय से कक्षा बारहवीं के छात्र हैं तथा मोतिहारी, बिहार से ताल्लुक रखते हैं।

www.facebook.com/kuldeepxcellent

कार्टून कोना

अनिल भार्गव

www.JeevanMag.com

चरित्र का निर्माण तब नहीं शुरू होता जब बच्चा पैदा होता है; ये बच्चे के पैदा होने के सौ साल पहले से शुरू हो जाता है।

नया भारत

-आकाश कुमार

इंतेहा हो गयी इंतज़ार की! स्टेशन पर खड़े लोग भारतीय रेल को 'शुद्ध भोजपुरी' में गलियाते हुए लेट ट्रेन की राह देख रहे थे। प्रतीक्षा के बाद जब ट्रेन आई तो धक्का-मुक्की का दौर शुरू हो गया। हमने किसी तरह अपने 'वेटिंग 5' के टिकट पर खीस निपोरते हुए सीट ली। पर डर यह कि हमें ज़ल्द ही बेदखल न कर दिया जाये। कई छोटे-बड़े स्टेशन होते हुए ट्रेन एक अदने से स्टेशन पर आ रुकी। परन्तु वह स्टेशन ऐसे पुलकित न हुआ जैसे कोई ग़रीब मेज़बान किसी बड़े, अभिजात्य मेहमान को पाकर होता है। कारण कदाचित यहीं रहा होगा कि इस बड़ी ट्रेन को अक्सर क्रासिंग के कारणवश उस छोटे स्टेशन का आतिथ्य स्वीकारना पड़ता होगा।

ख़ैर, सामने ही दूसरी ट्रेन लगी है। मैंने सर उठकर देखा तो दिखाई पड़ा 'केवल महिलाएं' लिखा हुआ डब्बा जिसमे न के बराबर भीड़ थी। उसमें बैठी एक हमउम्र तरुणी से नज़रें मिल गयीं और स्वाभाविक रूप से झेंप कर उसने अपना सर झुका लिया। उसके बगल में बैठा एक छोटा बच्चा, जो शायद उसका भाई रहा होगा, भुट्टे खा रहा था। बालसुलभ मुस्कान के साथ उसने मेरी ओर देखा और मैंने भी उसका ज़वाब भीनी मुस्कान के साथ दिया।

"भईया, भईया... जूता पॉलिश करवाएंगे?"- नीचे से आ रही इस आवाज़ ने मेरी तन्द्रा को भंग कर दिया। देखा तो एक ग़रीब, फटेहाल, कमउम्र लड़का हाथ में पॉलिश व ब्रश लिए ट्रेन की फर्श पर बैठा था। बदहाली के बावज़ूद आँखों में आशा तथा चेहरे पर चमक ने उसकी क्षीणकाय काया को अलग रूप दे रखा था।

"ये तो पढ़ने की उम्र है!"- अनजाने में मेरे भाव शब्दों का रूप ले प्रस्फुटित हो उठे।

"पढता हूँ भईया! चौथी में हूँ। जोड़, घटा, गुना, भाग- यहाँ तक कि पढ़ना भी आता है। मैडमजी मुझे बहुत मानती हैं।"- कहते हुए उसका चेहरा गर्व से खिल उठा। मेरे हाथ से अख़बार ले पढ़ कर उसने इस बात की तस्दीक़ कर डाली।

"तो फिर ये काम?"- हर्ष मिश्रित आश्चर्य से मैंने पूछा।

उसका खिला चेहरा ऐसे बुझ गया जैसे बिजली टूट कर गिरी हो। "बापू बीमार हैं। घर में पैसा नहीं है। अब तो स्कूल भी छूट गया है।"

"ऐसे ऐसे बहुत देखे हैं!"- एक सहयात्री ने निहायत ही बेहूदाना अंदाज़ में तंज कसा।

www.JeevanMag.com

मेरा गुस्सा जाग उठा और उम्र का अंतर विस्मृत करते हुए मैंने उन्हें डांट पिला दी। - " आपको टांग अड़ाने का निमंत्रण किसी ने नहीं दिया। लड़का भीख नहीं मांग रहा, मेहनत की रोटी तोड़ रहा है।" शालीनता के दायरे में रह मैंने साहब को खूब खरी-खोटी सुनाई।

लड़के से जूते पॉलिश करा एक पचास का नोट दिया जिस पर वह बाकी रुपये लौटाने लगा पर मेरे मनाने के बाद उसने पैसे रख लिए। उसकी आँखों में मैंने एक नया भारत देखा था... साधनों की तंगी के बावज़ूद आगे बढ़ने की उत्कट अभिलाषा।

ट्रेन ने सीटी दी और गतिमान हो गयी। दूर खड़ा एक पागल ट्रेन पर पत्थर फेंके जा रहा था पर ट्रेन तो जैसे उसे मुंह चिढ़ाती, सरसराती, बलखाती, तेज़ी से काफी दूर तलक निकल आई थी। रुके हुए, ठिठके पड़े हिंदुस्तान ने शायद अब रफ़्तार पकड़ ली थी। मैंने खिड़की से झांककर देखा तो खेतों में फैली हरियाली के दर्शन हुए। अभी-अभी अंतःकरण की सरज़मीं पर बारिश हुई थी- बारिश खुशियों की!

लेखक जीवन मैग के प्रमुख संपादक हैं।
सम्प्रति आप जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में विज्ञान संकाय से कक्षा बारहवीं के छात्र हैं तथा मोतिहारी, बिहार से ताल्लुक रखते हैं।
www.facebook.com/akashmanofsky

दाह-संस्कार

-अक्षय आकाश

सुबह-सुबह जब मैं निद्राधीन था तब मेरी बहन के एक वाक्य ने मुझे निद्रा विहीन कर दिया– “बड़े काका अब नहीं रहे !”....

इतना सुनते ही मैं परिवार के अन्य सदस्यों के पास गया जो यह विचार कर रहे थे की आगे क्या करना है. एक घंटे में हम सभी गाँव के लिए रवाना हो गए. आदतन मेरे कान में इयरफोन पड़ा था. मैंने गाड़ी की खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला. उसी क्षण मेरी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने

www.JeevanMag.com

लगी. कारण स्पष्ट न था. क्या यह काका के जाने का दुःख था? या पिछले दिनों मेरे जीवन में आया तूफ़ान ? या फिर इयरफोन से सुनाई दे रहा दुःख भरा गीत ? हो सकता है बाहर से आने वाली हवा के थपेड़ों की वजह से ही मेरी आँखों में पानी आया हो. अब गाँव में दस दिन और बिताने की मजबूरी थी जिसकी वजह से मैं कॉलेज सही वक़्त पर नहीं पहुँच पाता. गाँव में पांव देते ही हमारा स्वागत स्त्रियों के क्रंदन से हुआ जो काका के पार्थिव शरीर को घेरे हुए थीं. मेरी समझ में नहीं आ रहा था- कहाँ जाऊं ? घर में हरेक आँख नम थी. कुछ समय पश्चात गाँव के बड़े-बुजुर्ग विधिपूर्वक दाह-संस्कार करने की तैयारी में लग गए. उनकी अर्थी को कंधा देने का समय आया. पीछे मैं और मेरे भैया (काका के छोटे पुत्र) और आगे मेरे पिता और चाचा थे. वे शायद जीवन में कभी एक दूसरे के साथ न रहे हों. ऊपर से काका यह देख कर स्वयं को खुशनसीब समझ रहे होंगे कि उनके दोनों अनुज जिनमें दीर्घकाल से मनमुटाव चल रहा था आज साथ खड़े थे. शायद इसी कामना से काका ने ऐसे समय पर देह का त्याग किया हो. क्या यह मेरे पिता एवं चाचा के दीर्घकालिक मनमुटाव का दाह-संस्कार था ?

कमला नदी (इसे कमलेश्वरी के नाम से भी जाना जाता है) के घाट पर काका का अंतिम संस्कार होना था. वहां पहुँचकर उनके शव को स्नान करवाकर, नई धोती धारण करवाई गयी. तत्पश्चात, उनके शरीर को चिता पर रख कर उसपर घी और तेल का लेप किया गया जिसका कारण मेरी समझ में नहीं आया- क्योंकि घी वो खाते नहीं थे और तेल वो लगाते नहीं थे. तभी ख़याल आया कि यह सब तो अग्निदेव को समर्पित करने के लिए हो रहा है। खैर, उनकी चिता को उनके ज्येष्ठ पुत्र ने अग्नि दी जिनकी चार दिन पहले शादी हुई थी और एक दिन पहले चतुर्थी. और तीन दिनों के बाद दुल्हन का गौना था. प्रकृति का ऐसा विरोधाभास मैंने अपने जीवन काल में पहली बार देखा था. क्या ये उस पुत्र की इच्छाओं का दाह संस्कार था या उसकी दुल्हन की चाहतों का, जो अपने गौने पर पति के साथ ससुर का आशीर्वाद लेने को व्याकुल थी?

शवदाह के पश्चात सभी 33 लोग जो वहां उपस्थित थे नदी में स्नान करने गए. नदी में प्रवेश करते समय सभी के पैर मिट्टी से सन गए. मुझे लगा यह मिट्टी हमारे दुर्गुणों का प्रतीक है जो नदी में डुबकी लगाने के बाद धुल जायेंगे. परन्तु नदी से बाहर आते ही हमारे पैर पहले से अधिक मिट्टी में सन गए थे. लोग दूसरे रास्ते से एक कतार में "राम नाम सत्य... हरी ॐ..." कहते हुए घर पहुँचे जहाँ आँगन में लौह, जल, अग्नि और पत्थर के स्पर्श के पश्चात ही "कुछ और" किया गया. मैंने एक बुजुर्ग से पूछा- "ऐसा क्यों ?" जवाब मिला- "पंचतत्व का स्पर्श." पांचवा तत्व – वायु. पर मेरी समझ में नहीं आया कि पंचतत्व में लौह और पत्थर कब से सम्मिलित हो गए ?

मैंने पंडित जी से आगे का क्रम पूछा तो उत्तर मिला, "तीन दिनों तक घर में चूल्हा नहीं जलेगा, घर में पूजा नहीं होगी, दसवें दिन सभी पुरुष केश और दाढ़ी-मूंछ का मुंडन करवाएंगे आदि आदि...". तत्काल, इन सब का कारण पूछने की मेरी हिम्मत नहीं

www.JeevanMag.com

हुई. मैं सोचता ही रह गया कि क्या मेरे काका की आत्मा को अपने परिवार को आधा भूखा देखकर शांति मिलेगी ? हमें उदास देख कर क्या वह खुश होंगे ? सवाल तो अनेक थे परन्तु पूछने की हिम्मत नहीं थी.

उपस्थित लोगों को इसका तनिक भी आभास न था की परिस्थितियां विवाह से श्राद्ध में परिवर्तित हो जाएँगी. यह अनुभव दर्शाता है की जीवन में किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है. फिर यह सब आडंबर किस हेतु ? मृत्यु अपने स्वयंवर में खूबसूरत से खूबसूरत नौजवान को भी नहीं छोडती. इसपर किसी का वश नहीं है क्योंकि यहाँ न कोई सावित्री है न कोई रावण. अगले ही क्षण ख्याल आया- जब तक जिंदा हैं जी लेते हैं, मौत को मरणोपरांत ही देखेंगे. आगे क्या होगा ? यही सोचते हुए दिन बीत गया. क्या पिताजी और चाचा के मनमुटाव का दाहसंस्कार होगा ? या हमारे दुर्गुणों का ? क्या होगा उस पुत्र का जिसकी अभी अभी शादी हुई है ? कैसी होगी घरवालों की ज़िन्दगी ? तभी आनंद फिल्म का एक डायलोग याद आया, "ज़िन्दगी लम्बी नहीं बड़ी होनी चाहिए." और मैं अश्रुयुक्त मुस्कान सहित पुनः निद्राधीन हो गया...

लेखक जीवन मैग की संपादन समिति के सदस्य हैं. आप दिल्ली विश्वविद्यालय के क्लस्टर इनोवेशन सेन्टर में बीटेक मानविकी के छात्र हैं. www.facebook.com/akshay.akash.56

Uncle Tichkoo

Uncle Tichkoo is a wise old man but lately with age, he appears to suffer from Amnesia. He has lost the grasping power but is never short of wise advice at the right time. He is clever and sometimes it appears that he is faking his amnesia. Tichkoo comprises of 2 words (Tich=slightly and Koo=cool). This character is a creation of ***Divya Suri*** who is a student of class 5th of Queen's Valley School. From now on; Jeevan Mag will publish cartoon strips of Uncle Tichkoo in every issue. © Divya Suri www.tichkoo.com

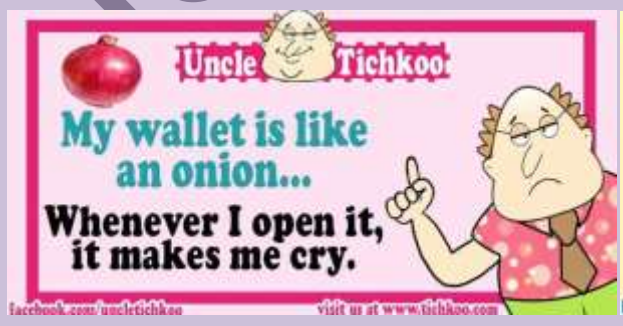

www.JeevanMag.com

विजेता बोलते हैं कि- **"मुझे कुछ करना चाहिए".** हार**ने वाले बोलते हैं** कि- **"कुछ होना चाहिए".**

डायरीनामा

दिल बनारसिया

-अमिनेष आर्यन

अस्सी घाट की सीढ़ियों पर जब बनारस की शाम ढलती है तो हरेक कदम अपनी ज़िंदगी की उलझनों को समेटे गंगा की ओर बढ़ता है- इस उम्मीद में कि शायद गंगा उन्हें अपनी लहरों पर बिठाकर मायावी दुनिया की छलावा-लबरेज़ जिंदगी से किसी सुकून और शांति के सुन्दर महासागर में ले चले जहाँ ना ये भागदौड़ हो ना ही हों वे अनसुलझे सवाल जिनके जवाब हम दिन रात बेचैनी से ढूंढते फिरते हैं.

शाम किस ओर ढली पता भी ना चला. चारों तरफ लालिमा छाई है, मानो आसमां ने श्रृँगार किया हो. गंगा की लहरों में बलखाती दीपों की कतार और रोशनी की परछाइयों में झिलमिलाती गंगा अप्रतिम सुंदर लग रही है. बिल्कुल किसी ज़िम्मेदार जिंदगी की तरह बही जा रही है वह. आखिर हो भी तो क्यों नहीं, सारे मानव जाति को पापमुक्त करने का बीड़ा जो उठा रखा है. दूर खामोश अँधेरे में, गंगा के उस पार एक झिलमिलाती रोशनी काशी नरेश की ऐतिहासिक भव्यता का दीदार करा रही है, रामनगर किले कि अटारियों से झाँकती यह प्रकाशावली इस बात का संकेत थी कि बनारस परिपूर्ण है- इतिहास, सभ्यता, संस्कृति, धार्मिक संस्कारों एवं पवित्रता से और उस उमंग और नए जोश से भी जो सीढ़ियों पर गिटार की धड़कती तार पर थिरकती गुनगुनाती युवाओं की टोली में नजर आ रहा था...

Give me some sunshine Give me some rain Give me another chance I wanna grow up once again. पता तक नहीं चला कि दिल को कब बनारस से मुहब्बत हुई और गंगा की लहरें कब एक दिव्य और अलौकिक आँचल से तन्हा शाम की सुरीली छांव बन गयी, बस निगाहें उस शाम उस हसीन सपने के आगोश में जागती रही- जहाँ सिर्फ सुकून था और अनहद आनंद भी. दिनभर के काम से थके नर नारी किसी अलौकिक सुकून और शांति की खोज में गंगा आरती की धुन पर अपना तन-मन रमाए बैठे हैं. उन सीढ़ियों पर जहाँ अँधेरा पसरा था प्यार के राही बैठे थे तो कहीं कोई तन्हा दिल गंगा कि धारा में पैर लटकाए बैठा था. दूर नदी में रुक-रुक कर एक लहर सी उठती है और अपने साथ लाती है वह प्रतिध्वनियाँ जो दिव्य आभास कराती है- कभी कबीर के खंजरी की ताल गूंजती मर्मस्पर्शी दोहावली की तो कभी गंगा जमुनी तहजीब का पैगाम लिए बिस्मिल्लाह खान की मधुर शहनाई की. जैसे गीता की छाँव में कुरान की आयतें, मैं खामोश बैठा सुनता रहा और कभी-कभी पास के पान की दुकान पर रेडियो से बज रहा गीत- खइके पान बनारसवाला...लेकिन गंगा के शांत प्रवाह में एक आह भरी कसक सी है...लाखों संतान हो जिसके, ना जाने क्यों वह माँ असहाय निर्बल सी कराह रही है...

लेखक ने इसी वर्ष 12वीं उत्तीर्ण की है. बीते दिनों आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की दाखिला प्रक्रिया के सन्दर्भ में बनारस आते जाते रहे हैं. यह रिपोर्ताज आपने वहां से अपनी पहली यात्रा से लौटकर लिखा है. www.facebook.com/aminesh.aryan

www.JeevanMag.com

किसी डिग्री का ना होने दरअसल फायेदेमंद है. अगर आप इंजिनियर या डाक्टर हैं तब आप एक ही काम कर सकते हैं. पर यदि आपके पास कोई डिग्री नहीं है, तो आप कुछ भी कर सकते हैं.

पाठक मत

प्रधानमंत्री की विदेश यात्रा अप्रभावी

खास पत्र

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शपथग्रहण समारोह में सार्क राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित कर अपनी विदेश नीति का शानदार आगाज किया था, लेकिन दो महीने बाद वह जोश फीका पडता नजर आ रहा है. उनका हालिया ब्राजील दौरा मिलाजुला रहा. यह भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच पर कूटनीतिक धाक जमाने का पहला मौका था. ब्राजील जाते वक्त वे बर्लिन में जर्मनी के चांसलर एंजेला मर्केल के साथ डिनर करने उतर गये, लेकिन मर्केल उस समय ब्राजील में फीफा विश्वकप का फाइनल मैच देख रही थीं, जिससे भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर थोड़ी-बहुत शर्मिंदगी तो झेलनी ही पड़ी है, दूसरी ओर प्रधानमंत्री के इस कदम से जापान के नाराज होने का डर है, जिससे उन्होंने सबसे पहले द्विपक्षीय समझौते करने का वादा किया है. वहीं फोर्टलेजा में मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिन पिंग की मुलाकात के बाद मोदी-पुतिन बैठक होनी थी. प्रधानमंत्री दो घंटे तक पुतिन की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन वे नहीं आये. फिर उनकी मुलाकात अगले दिन संभव हो सकी. इस तरह रूस ने दबी जुबान भारत को कुछ संदेश दिया है. गौरतलब है कि बीते दिनों रूस के साथ पाकिस्तान के संबंधों में निकटता आयी है. रूस ने पाकिस्तान के हाथों हथियार बेचने का अपना प्रतिबंध वापस ले लिया है. उधर चीन ब्रिक्स बैंक का मुख्यालय अपने यहां ले जाने में कामयाब रहा है, हालांकि इसका पहला सीइओ भारतीय होगा, जो हमारे लिए एक महत्वपूर्ण उपलिब्ध तो है, पर पहले की अपेक्षाकृत कम. प्रधानमंत्री की यह महत्वपूर्ण यात्रा मिलेजुले परिणामों वाली रही. हां, उनलोगों को निराशा जरूर हुई है, जो मोदी को मनमोहन सिंह की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिक प्रभावी देखने को इच्छुक थे.

नंदलाल, दिल्ली विश्वविद्यालय

लीजिए पुरस्कार पत्र-लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए हम सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखकों को पुरस्कृत करते हैं. आपके पत्रों का स्वागत है. पत्र में फोन नंबर भी दें.

राजकमल प्रकाशन

- पोस्ट करें : प्रभात खबर, अद्वैता भवन, बोरिंग रोड चौराहा, पटना.
- मेल करें : इ-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है. patna@prabhatkhabar.in
- फैक्स करें : 0612-2540525 पर

प्रभात ख़बर पटना संस्करण में प्रकाशित

नंदलाल मिश्रा का आलेख

बेटा- बाबू जी, अब हमनी के त ग्रेजुएशन हो गईल...

सोचत बा मास्टर्स फोरेन युनिवेर्सिटी से कर लें....

लालू- ई त बड निक आईडिया बा हो.....

चल तोहार एड्मिसन ऑक्सफ़ोर्ड में करवा दूँ....

बेटा- ना बाबू , वहां ते डिक्सनरी पढैत पढैत क त हमर जान निकल जेतय ....

विख्यात बड़बड़िया

www.facebook.com/vikhyat.kumar.77

आप कैसे पहचानेंगे कि आप देश के किस हिस्से में हैं.....?

1) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी आता है,उन्हे देखता है और चला जाता है... ये 'MUMBAI' है.

2) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी आता है, उन्हें समझाने की कोशिश करता है, फलस्वरुप दोनो लड़ना छोड़ कर समझाने वाले को मारने लग जाते हैं... ये 'DELHI' है.

3) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी अपने घर से आवाज़ देता है, "मेरे घर के आगे मत लड़ो, कहीं और जाओ".... ये 'BANGALORE' है.

4) दो आदमी लड़ रहे हैं, पूरी भीड़ देखने के लिये इकट्ठी हो जाये, और एक आदमी चाय की दुकान लगा दे...तो ये 'GUJARAT' है.

5) दो आदमी लड़ रहे हैं, दोनो मोबाईल से कॉल कर दोस्तो को बुलाते हैं, थोड़ी देर में 50 आदमी लड़ रहे हैं. ..ये 'HARYANA ' है.

6) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी ढेर सारी बीयर ले आता है, तीनो एक साथ बीयर पीते हुए एक-दूसरे को गाली देते हैं.. ये ज़रूर 'GOA' है.

7) दो आदमी लड़ रहे हैं, दो आदमी और आते हैं, वो आपस में बहस करने लगते हैं कि कौन सही है कौन गलत, देखते देखते भीड़ जमा हो जाती है, पूरी भीड़ बहस करती है, लड़ने वाले दोनो खिसक लेते हैं. ये 'KOLKATA' है.

8) दो आदमी लड़ रहे है, एक आदमी आता है, गन निकालता है और ढिचकांव. और सब शांत हो जाता है. यानि कि आप UP पहुँच गए.

9) अगला नंबर है BIHAR , अजी ज़रा अपनी कल्पना शक्ति का इस्तेमाल करना भी सीखिए! :P

संकलन- आलोक कुमार वर्मा www.facebook.com/alokkumar.verma.330

www.JeevanMag.com

Umair Altaf, Kulgam (Jammu &Kashmir)

Karan Negi
Shimla

Abha Ojha, Jaipur

Akash Kumar

Photo by- Altaf Mallik
Jamia Nagar, Delhi

Photos Of The Month

Akash Kumar, Motihari

Chaitanyaa Sharma, Jaipur

अगर हम हल का हिस्सा नहीं हैं, तो हम समस्या हैं.

www.JeevanMag.com

जुदाई

आज मैं जो कुछ भी हूँ अपनी तक़दीर के सहारे,

और जी रहा हूँ ज़िन्दगी उसकी तस्वीर के सहारे।

अब लगता ही नहीं दिल कहीं इस उजड़े चमन में,

चुरा लिया है दिल उसने किसी मुख़बिर के सहारे।

कोशिश कर रहा हूँ दिल बहलाने की इस उजड़े चमन में,

उसके हाथों से लिखे ख़त की तहरीर के सहारे।

लोग इश्क करके जीते हैं ज़िन्दगी मुफ़लिसी में,

क्या वो नहीं जी सकती ज़िन्दगी इस फ़क़ीर के सहारे।

अब मौत भी आती नहीं मांगने पर ख़ुदा से,

बाँधा हुआ है उसने रूह को किसी ज़ंजीर के सहारे।

शबाब अंजुम जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली में ग्यारहवीं विज्ञान के छात्र हैं। आप किशनगंज, बिहार से ताल्लुक रखते हैं। www.facebook.com/shawab.anjum

मुशायरा

आह तहरीर हुई जाती है
शब की तामीर हुई जाती है

चुप हुए जाते हैं सारे मंज़र
कोई तस्वीर हुई जाती है

सुब्ह होने से भी होता क्या है
रात तक़दीर हुई जाती है

हर घड़ी तीर चलाते हैं ख्याल
याद शमशीर हुई जाती है

बात गुलरेज़ हम जो कह न सके
अब वो गम्भीर हुई जाती है

गुलरेज़ शहज़ाद विचारोत्तेजक शायरी की परंपरा के युवा संवाहक हैं. आप एक बेहतरीन रंगकर्मी तथा जीवन मैग के सलाहकार भी हैं.

ग़ज़ल

अपनी खुदाई का एहसास हो चला मुझको,
मुझे देख आँखों ने उसके वजू कर लिया॥

उसके इन्साफ के हम तो कायल हैं राघव,
मुझको गुलशन दिया,तो रंगों-बू ले लिया॥

इक परिंदा था दिल, पर फडफडाता हुआ सा,
उसकी आँखों ने क्यूँ सब आरजू कह दिया॥

उसने बचने की कोशिश लाखो की लेकिन,
इक नज़र ने अखारिश उसको छू ही लिया॥

राघवेन्द्र त्रिपाठी राघव जीवन मैग की संपादन समिति के सदस्य हैं। आप दिल्ली विश्वविद्यालय के संकुल नवप्रवर्तन केन्द्र में बी.टेक नवप्रवर्तन के छात्र हैं।

आज अपने एक महत्वपूर्ण सफ़र (बताना ज़रूरी नहीं है) के सिलसिले में ट्रेन की यात्रा का आनंद उठाता जा रहा हूँ..... यात्रा के दौरान एक से एक रोचक कारनामों के दीदार हो रहे हैं..... (हँसते-हँसते पेट ढीला हो गया है)

देखिए ना अभी अभी एक ठंडा (नाम का ठंडा) बेचने वाला 'कोका-कोला' को 'कंपा-कोला' कहते हुए गुज़रा तो पीछे से 'मूँगफली' को 'मोमफ़ली' कहता हुआ दूसरा आ धमका...नारियल और रामदाना वालों की तो पूछो ही मत... (उनकी महिमा राम ही जाने).....

अपनी अज़ीबो ग़रीब आवाज़ में एक से एक चीज़ें बेचते हुए मेरे बर्थ के सामने से गुज़र रहे हैं....

इसी दरम्यान एक बादाम वाला राग भैरवी में 'बादाम बोलो... बादाम बोलो...' अनवरत चिल्लाए जा रहा था... मैं गुस्से में 'बादाम...बादाम...' बोलने लगा.... मगर वो अपनी ही धुन में गुनगुनाता अगले डिब्बे की ओर बढ़ गया.... (वैसे भी बादाम का दाम केजरीवाल की टोपी की कीमत से कम नहीं था...)....!

विख्यात बड़बड़िया (लेखक सनबीम स्कूल, वरुणा, बनारस में 11वीं कक्षा के छात्र हैं.)

www.JeevanMag.com

The foolish thing, love

What a foolish thing love is!
Not divine but a dream,
which never comes true

It snatches up our heart & mind
And gives an everlasting pain,
Throughout the life span.

One who gets this,
It takes him to wrong & wrong;
Upto there from where
He can never come.

It snatches up
Whatever one has;
And leaves him to
Bewilder alone.

Alok Chandra is a student of Class XII Science of Shantiniketan Jubilee School, Motihari & has an association with Jeevan Mag from a long period of time.

The Road Not Taken

Two roads diverged in a yellow wood,
And sorry I could not travel both
And be one traveler, long I stood
And looked down one as far as I could
To where it bent in the undergrowth;

Then took the other, as just as fair,
And having perhaps the better claim,
Because it was grassy and wanted wear;
Though as for that the passing there
Had worn them really about the same,

And both that morning equally lay
In leaves no step had trodden black.
Oh, I kept the first for another day!
Yet knowing how way leads on to way,
I doubted if I should ever come back.

I shall be telling this with a sigh
Somewhere ages and ages hence:
Two roads diverged in a wood, and I—
I took the one less traveled by,
And that has made all the difference.

Robert Frost

हे भागीरथी बोलो तो!

हे भागीरथी बोलो तो!
क्यों हो मौन शांत कुछ तो उत्तर दो?
हे भागीरथी बोलो तो!
करने तुम जिनका उद्धार
आई छोड़ स्वर्ग द्वार
वे कर रहे नित - नित
तेरा दूषण - प्रतिकार
क्यों लौट न जाती छोड़
धरा स्वर्ग को?
हे भागीरथी बोलो तो!
कर तनिक कलयुग ध्यान
रहा न मातृ पितृ सेवा ज्ञान
आशा तेरी बेकार निराधार है
पुत्र तेरे दुखों से अनजान
क्या 'माता हो न कुमाता' के
मृदुल वैभव की रखवाली हो?
हे भागीरथी बोलो तो!
या तोड़ दो बांध सारे
डुबो दो भूतल किनारे
या भर दो मानव-उर में
प्रेम बीज प्यारे प्यारे
क्या हुई तुम भी
वृद्ध-क्षीण-अशुच हो?
हे भागीरथी बोलो तो!
क्यों हो मौन शांत
कुछ तो उत्तर दो?
हे भागीरथी बोलो तो!

नंदलाल मिश्रा
प्रबंध संपादक

www.JeevanMag.com

मंथन

एफवाईयूपीः एक नवोन्मेषी शिक्षा प्रणाली की हत्या

-नंदलाल मिश्रा

दिल्ली विश्वविद्यालय और यूजीसी में लम्बी खींचतान के बाद डीयू के कुलपति ने चारवर्षीय पाठ्यक्रम को लौटा कर पुनः त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम लागू करने का फैसला किया है. इस प्रकरण ने कोई सवाल सुलझाया नहीं है, बल्कि कई नए सवाल खड़े किए हैं। इसने उच्च शिक्षा के तंत्र में मौजूद गंभीर गड़बड़ियों को भी उजागर किया है। अगर देश के एक बड़े और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के साथ ऐसा हो सकता है, तो छोटे और देश के कोने-कोने में स्थित विश्वविद्यालयों का हाल जाना जा सकता है। कुछ लोगों ने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, सुविधापरस्ती और स्वयं-स्वार्थ सिद्धि के लिए शिक्षा व्यवस्था में इतनी जल्दी उलटफेर की. शिक्षा में इस कदर राजनीतिक दखल दुर्भाग्यपूर्ण है. वैसे तो सरकार यह कहती रही कि वह यूजीसी और डीयू के इस मामले में दखल नहीं देगी. किंतु यह पूरी तरह स्पष्ट है कि केंद्र में सत्ता परिवर्तन के बाद सरकार के दबाव में ही यूजीसी ऐसा कर रही थी. यदि ऐसा नहीं है तो फिर डेढ़ साल तक वह चुप क्यों रही.

गौरतलब है की पिछले साल 23 जुलाई को यूजीसी ने दिल्ली विश्वविद्यालय को एक चिट्ठी लिखकर इस कोर्स को शुरू करने की सहमति दी थी. यह एक न्यायालीय शपथ पत्र था जिसमें यह स्वीकार किया गया था कि चारवर्षीय पाठ्यक्रम किसी प्रकार से शिक्षा नीति के विरुद्ध नहीं है. इतना ही नहीं यूजीसी ने डीयू में नए पाठ्यक्रम को लागू करने में मदद हेतु सीएसआईआर के महानिदेशक एस के जोशी के नेतृत्व में 5 सदस्यों की एक सलाहकार समिति गठित की थी. इस समिति ने 25 फरवरी 2014 को अपनी रिपोर्ट दी जिसमें कहा गया कि नया पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अनुपालन नहीं करती है. और तब इस रिपोर्ट के आधार पर यूजीसी 20 जून से इसे वापस लेने हेतु लगातार डीयू पर दबाव बनाये रखती है. क्या यूजीसी रिपोर्ट के तुरंत बाद ऐसा नहीं कर सकती थी जिससे नामांकन प्रक्रिया में भी दिक्कतें नहीं आतीं. क्या एस के जोशी कमिटी सचमुच मदद के लिए बनी थी या जांच के लिए? उसे अपनी रिपोर्ट देने में इतना लम्बा वक्त क्यों लगा?

जाहिर है या तो यूजीसी तब यूपीए सरकार के दबाव में फैसला कर रही थी या वह अब एनडीए सरकार के इशारे पर ऐसा कर रही है जिसने अपने दिल्ली घोषणा पत्र में इसका वादा किया था. सवाल तो यूजीसी की स्वायत्तता का है. क्या यूजीसी अपने विवेक के बजाय सरकार के इशारे पर कठपुतली की तरह नाचती रहेगी? यह देश की शिक्षा संस्थानों और विद्वानों की समितियों के लिए शर्मनाक है. जैसे सीबीआई निदेशक रंजीत सिंह ने ये कहते हुए सरकार को सावधान कर दिया था की केन्द्रीय जांच ब्यूरो पिंजरे में बंद तोता नहीं है वैसे ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सरकारी दबाव और नीच राजनीति से ऊपर उठ कर काम करना चाहिए. डीयू कुलपति दिनेश सिंह की बजाय यूजीसी अध्यक्ष वेद प्रकाश को इस्तीफा दे देना चाहिए था क्योंकि वे अपनी संस्था की स्वायत्तता की रक्षा करने और विवेकपूर्ण फैसले लेने में नाकाम रहे हैं. ये वहीं वेद प्रकाश हैं जो एफ.वाई.यू.पी लाने के समय में

JeevanMag.com
www.JeevanMag.com

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below